गुप्त राजवंश के इतिहास के साधन

Dr. Kamlesh Kumar (A.I.H) SNSRKS College, Saharsa.

गुप्त राजवंश का इतिहास हमें साहित्यिक और पुरातत्वीय दोनों ही प्रमाणों से हमें ज्ञात करता है। साहित्यिक साधनों में पुराण, विष्णु, वायु, ब्रह्माण्ड तीनों को पुराणों में हम गुप्त-इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायक मान सकते हैं। इनसे हमें गुप्त वंश के प्रारम्भिक इतिहास के बारे में कुछ ज्ञान प्राप्त होता है। विशाखदत्त कृत देवीचन्द्रगुप्त नाटक से गुप्तवंशी नरेश रामगुप्त और चन्द्रगुप्त द्वितीय के विषय में कुछ बातें में सूचना मिलती हैं। उस समय अधिकांश विद्वान् महाकवि कालिदास को गुप्तकालीन विभूति मानते हैं। उनकी ऐसे अनेकानेक रचनाओं से गुप्तयुगीन समाज साथ ही संस्कृति पर सुन्दर तरह का प्रकाश पड़ता है। शूद्रककृत मृच्छकटिक और वात्स्यायन के कामसूत्र से भी गुप्तकालीन शासनव्यवस्था साथ ही नगर जीवन के विषय में रोचक के बारे में सामग्री मिल जाती है। भारतीय साहित्य के अतिरिक्त विदेशी यात्रियों के बारे में विवरण भी गुप्त इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायक हुआ है। इस प्रकार से यात्रियों में फाहियान का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय किया गया है, वह एक चीनी यात्री था। फाहियान गुप्तनरेश चन्द्रगुप्त द्वितीय (375-415 ई०) के शासन काल के समय में भारत आया था।